मौत का जीवनदान

(एक सच्ची कहानी)

दो बिस्वा की भूमि, जो चारों तरफ से डेढ़ फीट की ईंट और मिट्टी की दीवार से घिरी हुई थी, उस मोहल्ले के ज्यादातर बच्चों के क्रीड़ाविहार (खेलने) का सबसे उत्तम स्थान था।

बच्चों के शीतकालीन अवकाश का समय चल रहा था। वे अब दिन में कई बार अपने क्रीडास्थल का निरीक्षण करने चले आते थे। शीत लहर के प्रकोप से उत्पन्न कोहरा दिनभर किसी के अस्तित्व को छिपाकर मानो चारों ओर अपनी सफलता और पराक्रम का प्रदर्शन कर रहा हो।

पहला पहर समाप्त होने की ओर अग्रसर था और बच्चे क्रीडाविहार करने में लीन थे। क्रीडाविहार के समानांतर बच्चों में विचारों या समाचारों का आदान-प्रदान स्वाभाविक है।

झुनिया ने कहा, "आज मेरे यहाँ सुबह-सुबह से ही एक कुत्ते का बच्चा आया हुआ है।"

जय ने प्रश्न किया, "कैसे?"

झुनिया बोली, "पता नहीं कब और कैसे आया! आज सुबह-सुबह जब पापा ने गेट का ताला खोला, तो देखा कि वह हमारी दीवार से सट कर बैठा हुआ था।"

जय और घीसू के अलावा उसकी बातें सुनने में किसी को कोई विशेष रुचि न थी और सब फिर से अपने क्रियाकलाप में मशगूल हो गए। पर जय, घीसू और मुन्नी ने पिल्ले को एक बार देखने का निश्चय किया। तीनों खेल छोड़कर झुनिया के द्वार पर गए और पिल्ले का निरीक्षण-परीक्षण करके लौटे।

जय ने अपने भाई वीरू से कहा, "उस पिल्ले की हालत बहुत खराब है। ठंड से थर-थर कांप रहा है। इस ठंड में ऐसे रहा तो बचेगा नहीं।"

घीसू बोला, "पता नहीं उसकी मां कहां है?"

मुन्नी ने कहा, "हां, बहुत डरा-डरा सा लगता है।"

जय ने उस पिल्ले की इस मनोदशा का कारण बताया, "अरे! कुत्तों में एक कुतिया दूसरी कुतिया के बच्चे को अक्सर मार दिया करती है।"

झुनिया ने कहा, "अब तो उसकी मां भी उसके पास नहीं है जो उसको बचाएगी।"

वीरू ने अपनी विशेषज्ञता का प्रमाण देते हुए कहा, "अगर उसकी मां ही होती, तो दिक्कत किस बात की थी!"

सबने कुछ देर तक चली भावनात्मक चर्चा के बाद यह निश्चय किया कि उस पिल्ले को लाकर अपनी खेल-भूमि से 10 कदम की दूरी पर दो बिस्वा के भूखंड में रखा जाए, जो सागौन के पेड़ों से घना था। उस भूमि के मालिक ने उसे भविष्य में बेचने के उद्देश्य से लिया था। भूमि को खरीदने के तत्पश्चात ही उन्होंने उसमें सागौन के पौधे लगवा दिए थे ताकि मुनाफे को सर्वोच्च स्तर तक ले जाया जा सके। वे सागौन के पौधे अब युवा वृक्ष का रूप ले चुके थे।

बच्चे पिल्ले को उठाकर लाए और भूखंड के सबसे छायादार और घने वृक्ष के नीचे रख दिया, जो लगभग भूखंड के बीचों-बीच था, ताकि पिल्ले को कोहरे की गलन से न्यूनतम क्षति हो। जय और वीरू का घर सागौन के भूखंड के सामने था। दोनों स्थलों के बीच केवल एक 20 फीट चौड़ी सड़क का फासला था। जय और वीरू के घर से सटा हुआ मुन्नी का घर था। जय झटपट अपने घर से दौड़कर सूत का बोरा ले आया और पिल्ले को उस पर बैठा कर चारों ओर से ढक दिया।

इसके पश्चात भी पिल्ले की हालत में कुछ सुधार नहीं दिख रहा था। अकस्मात् वीरू को एक तरकीब सूझी।

वीरू ने कहा, "इन सूखे सागौन के पत्तों को लाकर इस पिल्ले के पास जलाते हैं, ताकि उसकी आंच से इस पिल्ले को गर्मी मिल सके।"

सबने वीरू के विचार पर सहमति जताई। वीरू ने कहा, "चलो सब लोग जल्दी-जल्दी पत्ते बटोर कर पिल्ले के चारों तरफ रखते जाओ।"

बच्चे इस कार्य में जुट गए और देखते ही देखते डेढ़ मीटर व्यास का पत्तों से बना एक वृत्त (घेरा) तैयार हो गया, जिसकी ऊंचाई महज आधा फीट थी। बच्चों ने उसमें आग लगाई और धीमी आंच पर जलने दिया। यदि लपट तेज होती, तो बच्चे उसमें से कुछ पत्ते निकाल देते या डंडे से आग को कम कर देते।

आग 1 घंटे तक चली। शुरुआत में तो पिल्ला शिथिल था, मगर जैसे-जैसे आग की लपटें उसे ऊष्मा प्रदान करती गईं, उसके शरीर में हलचल होने लगी और उसका स्वास्थ्य निखरता गया। बच्चों में खुशी का माहौल था।

तभी जय और वीरू के पापा ने घर से आवाज़ लगाई, "चलो आओ, अब खाना खा लो। दूसरा पहर बीत चुका है।"

बच्चों का उस पिल्ले के पास आना-जाना लगा रहता और कोई कुछ ना कुछ लाकर उसे खिलाता-पिलाता रहता। मुन्नी की मम्मी ने एक कप दूध भिजवा दिया। झुनिया बिस्किट लेती आई। घीसू ब्रेड ले आया। पर पिल्ला अभी यह सारी ठोस खाद्य सामग्री खाने के लिए बहुत छोटा था।

शाम का वक्त हो रहा था। वीरू ने कहा, "इसे यहां छोड़ा, तो रात में ठंड के कारण यह मर जाएगा।"

झुनिया बोली, "हां भैया, कोई कुत्ता भी तो उसे काट सकता है।"

बच्चे उसे अपने घर ले जाना चाहते थे पर उन्हें पता था कि उनके मां-बाप इसकी इजाजत नहीं देंगे। सब धीरे-धीरे उसे वहीं छोड़कर जाने लगे, मगर जय और वीरू से रहा न गया। उन्होंने अपने मां-बाप से उसे एक रात के लिए घर में रखने का आग्रह किया। उनके माता-पिता अपने बच्चों का पिल्ले के प्रति इतना समर्पण देखकर मना न कर सके। उन्होंने अपने घर में एक दौरी (टोकरी) में बोरा बिछाकर पिल्ले को उसमें रख दिया।

रात बीती। सुबह फिर सारे बच्चे खेलने आए। झुनिया ताजा खबर लाई, "इस पिल्ले की बहन का पता चल गया है! बगल वाली कॉलोनी में एक घर बन रहा है, वहीं पर वह मजदूरों की झुग्गी में मुझे दिखी।"

जय ने पूछा, "तुम्हें कैसे पता कि वह इस पिल्ले की ही बहन है?"

झुनिया ने बताया, "मैंने उन मजदूरों से पूछा था। उन्हें भी वह उसी दिन मिली थी जिस दिन मुझे यह मिला था, और दोनों एक जितने ही बड़े लगते हैं।"

मुन्नी ने पूछा, "उसकी मम्मी नहीं थी उसके साथ?"

झुनिया ने कहा, "नहीं।"

बच्चों के प्रसन्न चेहरे मुरझा से गए, मानो उन्होंने पिल्ले का भविष्य देख लिया हो।

वीरू बोला, "हम आज ही इसे वहां पर ले जा के छोड़ देंगे, वहां पर यह बच जाएगा।"

जय ने सहमति जताते हुए कहा, "हां, वहां पर इसको इसकी बहन का साथ भी मिल जाएगा और मजदूर लोग इसे पाल लेंगे।"

सबने इस परामर्श पर सहमति जताई। वीरू ने पिल्ले को हाथों में उठा लिया और उसका मुंह बोरे से ढक दिया ताकि उसे रास्ता ना दिखे और वह लौट कर ना आ पाए। सब लोग मजदूरों की झुग्गी की तरफ चले। रास्ते में जब जय थक जाता, तो कभी वीरू तो कभी घीसू पिल्ले को संभाल लेता।

सब जब झुग्गी के पास पहुंचे तो देखा, कुतिया झुग्गी के अंदर एक छोटे से बालू के ढेर के ऊपर लेटी हुई थी। उन्हें देखकर वह उठ गई। वीरू ने पिल्ले को उसके पास उतारा। पहले तो दोनों एक-दूसरे को देखकर डरे, फिर धीरे-धीरे एक-दूसरे को सूंघ कर पहचान गए और अपनी-अपनी पूंछ हिलाकर अपने रिश्ते का प्रमाण दिया।

घीसू बोला, "मतलब यह एक-दूसरे के भाई-बहन हैं।"

सब प्रसन्न हो गए और इससे पहले कि कोई उन्हें देख ले, वे तुरंत ही उसे वहां छोड़ कर रवाना हो गए। सबने लौट कर राहत की सांस ली, मानो उनके सर से कोई भारी बोझ उतर गया हो।

अगले दिन सुबह फिर सब बच्चे अपने क्रीडास्थल पर जुटे और खेलना शुरू किया। तभी उधर से झुनिया रोते हुए चली आ रही थी। उसने जाकर सबसे कहा, "वह पिल्ला मर गया... उसकी लाश मैंने उस नाले के बगल वाली जमीन पर देखी है।"

सब बच्चों में दुख का माहौल छा गया, पर उनमें से सबसे ज्यादा दुखी जय और वीरू थे। वीरू से रहा न गया और वह मैदान की ओर चल पड़ा। वीरू जब उस नाले से कुछ दूरी पर था, तभी उसे किसी जानवर की काया का जमीन पर पड़े रहने का अस्पष्ट दृश्य दिखाई दिया। उसके ऊपर कुछ कौवे भी मंडरा रहे थे।

पास जाने की उसकी हिम्मत ना हुई और वह वहीं से लौट गया।